पाठ–24

सालिमअली

आइए, सीखे : ● पक्षी प्रेम और पक्षी संरक्षण ● प्रेक्षण और परीक्षण का महत्व ● जिज्ञासा और संकल्प की प्रेरणा ● शब्द रचना ● अनेक शब्दों के लिए एक शब्द।

*(**पाठ परिचय :** सालिम अली का पूरा नाम सालिमाई मुईज़ुद्दीन अब्दुल अली था। वे असाधारण पक्षी-प्रेमी थे। बयापक्षी के अध्ययन के परिणाम के प्रकाशन से उन्हें बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। 'फिन' बया पक्षी की खोज उनकी महत्वपूर्ण देन है। उन्होंने बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स लिखी, जिसमें पक्षियों के रोचक वर्णन के साथ उनके सुन्दर चित्र भी थे। उन्होंने पक्षी प्रेमी एस. डिलन रिप्ले के साथ हैण्ड बुक ऑफ द बर्ड्स इंडिया एण्ड पाकिस्तान लिखी। सालिम अली को पक्षी संरक्षण के लिए 'जे. पॉल वाइल्ड लाइफ कंजरवेशन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें कई राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार मिले।)*

एक दस वर्षीय बालक भाग कर आया और उसने वृक्ष के नीचे से घायल चिड़िया को उठा लिया। पक्षी गौरैया जैसा लगता था मगर यह देखकर बालक को आश्चर्य हुआ कि उसके गले पर पीला धब्बा था। दुविधा में पड़ कर बालक उस पक्षी को अपने चाचा अमीरुद्दीन तैयबजी के पास ले गया और पूछा कि यह किस किस्म की चिड़िया है ? उसके चाचा इस बारे में कुछ नहीं जानते थे। लेकिन वह बालक को बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के ऑफिस में ले गए – अॅपोलो स्ट्रीट पर एक बड़े भवन में एक छोटा-सा कमरा। लड़के का परिचय डब्लू. एस. मिलार्ड से, जो सोसाइटी के अवैतनिक सचिव थे कराया गया।

मिलार्ड को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि एक भारतीय लड़का यह पूछ रहा है कि यह कौन-सी

चिड़िया है। वह उसे उस कमरे में ले गए जहाँ तरह-तरह के मरे हुए पक्षियों के शरीरों में भूसा भरकर रखा हुआ था। एक के बाद दूसरे दराज खोले गए और तरह-तरह की चिड़ियाँ दिखाई गईं। लडके ने शायद यह कल्पना भी नहीं की थी कि पक्षी भी इतने प्रकार के होते हैं।

वह आश्चर्यचकित-सा मुँह बाये देखता रहा। मिलार्ड ने एक दराज खोला जिसमें तरह-तरह की गौरैयाँ रखी थीं। सावधानी से देखकर मिलार्ड ने एक मरा हुआ पक्षी उठाया। वह पक्षी बिल्कुल वैसा ही था, जैसा वह बालक अपने साथ लाया था। यह एक नर बया पक्षी था। वह केवल वर्षाऋतु में ही पहचाना जा सकता है जब उसके गले पर पीला धब्बा उभर आता है।

सालिम अली

लडके ने विस्मित हो कर कहा, ''मिलार्ड, मुझे नहीं पता था कि इतनी तरह के पक्षी होते है। मै इनके बारे में सीखना चाहता हूँ।'' मिलार्ड ने मुस्कराकर सिर हिलाया। उन्होने अब तक पक्षियों के बारे में जानने के लिए इस क्षेत्र के किसी वयस्क में भी विशेष उत्साह नहीं देखा था। उसके पश्चात् यह बालक प्रायः वहाँ आने लगा। वह सीखने लगा कि पक्षियों को कैसे पहचाना जाता है, मरे पक्षी को सुरक्षित रखने के लिए उनके शरीर को कैसे भरा जाता है।

इस बालक का नाम था सालिम मुईजुद्दीन अब्दुल अली, जिन्हें सारा संसार असाधारण पक्षी प्रेमी सालिमअली के नाम से जानता है। उसका जन्म 12 नवम्बर सन् 1896 में हुआ था। अपनी उम्र के नवें दशक में पहुँच कर भी पक्षियों में उनकी रुचि वैसी ही रही जैसी तब थी जब वह पहले-पहल मिलार्ड से मिले थे। उन्होंने पक्षियों के संरक्षण के लिए जो योगदान दिया है उसके लिए उन्हें जे. पॉल वाइल्ड लाइफ कंजरवेशन पुरस्कार मिला है। उन्हें कई राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार भी मिले।

आश्चर्य की बात यह है कि सलीम अली के पास किसी विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं थी। यद्यपि उन्होने कॉलेज में प्रवेश लिया था मगर बीजगणित से डर कर पढ़ाई छोड़ कर भाग खड़े हुए। वह अपने भाई की वुलफ्रैम के माइनिंग में मदद करने बर्मा चले गए। लेकिन यहाँ भी वह असफल रहे। वह बर्मा के जंगलों में बुलफ्रैम के बदले पक्षियों की खोज करने लगे।

घर लौटने पर उन्होने प्राणिशास्त्र में एक कोर्स कर लिया और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के अजायबघर में गार्ड नियुक्त हो गए। वह इसका उच्च प्रशिक्षण लेने के लिए जर्मनी गए। एक वर्ष बाद लौटने पर उन्होने पाया कि उनकी नौकरी चली गई है और वह बेकार हो गए हैं। पैसे की कमी के कारण उनकी अनुपस्थिति में उनका पद ही समाप्त कर दिया गया था।

सालिम अली विवाहित थे और उन्हे काम की सख्त जरूरत थी। लेकिन उन्हे ंज्यादा से ज्यादा क्लर्क का ही काम मिलने की उम्मीद थी। उसके बाद उन्हे ंअपने मन चाहे काम 'बर्ड वाचिंग' के लिए अधिक समय नहीं मिल सकता था।

सौभाग्य से उनकी पत्नी की कुछ निजी आय थी जिससे उन्हे बहुत सहारा मिला। उन्होंने बंदरगाह के पार किहीम में एक छोटा-सा घर ले लिया।

वह घर पेड़ों के बीच बना हुआ था और वहाँ बड़ी शान्ति थी। जब वर्षाऋतु आई तो सलीम अली ने देखा कि घर के पास ही बया पक्षियों ने एक पेड़ पर अपनी बस्ती बनाई है। तब बया पक्षी के बारे में लोगों को कुछ ज्यादा जानकारी नहीं थी। इन पक्षियों का अध्ययन करने का सालिम अली के लिए यह सुनहरा अवसर था। तीन-चार महीनों तक वे रोज घंटों बैठे बड़े धैर्य से इन पक्षियों को वहाँ कार्यरत देखते रहते । सन् 1930 में उन्होने अपने इस अध्ययन के परिणाम को प्रकाशित किया तो उन्हें पक्षीविज्ञान (ऑरनिथोलॉजी) में खूब ख्याति मिली।

जो महीने उन्होने बया पक्षियों का अध्ययन करते हुए बिताए थे। उससे उन्हें स्वयं परीक्षण और प्रेक्षण का महत्व समझ में आया और यह भी जान गए कि आँखे बंद करके किसी की बात को चाहे वह कितने भी प्रसिद्ध व्यक्ति ने क्यों न कही हो, स्वीकार नहीं करना चाहिए। वह अपने पर्यवेक्षण के परिणामों को बार-बार जाँचते थे और जल्दी किसी परिणाम पर नहीं पहुँचते थे। इससे उनके विचारों और राय को आधिकारिक माना जाने लगा है और इसी कारण कई बार उनका टकराव वरिष्ठ पक्षी प्रेमियों से हुआ।

इसका प्रसिद्ध उदाहरण है रैकेट टेल्ड ड्रोगों में दुम के परों का निकलना। एक प्रसिद्ध पक्षिविज्ञानी ने कहा कि सालिम अली का प्रेक्षण गलत है। लेकिन अंततः सालिम अली ही ठीक निकले। उनकी फिन बया की खोज भी महत्वपूर्ण योगदान है। समझा जाता था कि 100 वर्ष से वह पक्षी विलुप्त हो गया है, मगर सालिम अली ने कुमाऊँ की पहाड़ियों में उसे खोज निकाला।

अपने बचपन में सालिम अली को भारतीय पक्षियों पर एक अच्छी पुस्तक की कमी बहुत खलती थी। जो कुछ पुस्तकें उपलब्ध थीं, उनमें चित्र ही नहीं थे और इनमें केवल उबा देने वाला विस्तृत वर्णन था। ऐसी पुस्तकें किसी का पक्षियों के प्रति उत्साह बढ़ाने के स्थान पर उसे बिल्कुल समाप्त कर देती हैं, विशेषकर बच्चों में। सन् 1941 में उन्होनें यह कमी पूरी करने

की कोशिश की और बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स लिखी। उसमें पक्षियों का रोचक और सुन्दर वर्णन भी था और प्रत्येक जाति का सुन्दर चित्र भी। किसी अजनबी के लिए भी उसे देखकर पक्षी पहचानना आसान हो जाता है। सन् 1948 में उन्होने प्रसिद्ध पक्षी प्रेमी एस. डिलन रिप्ले के साथ एक अन्य महत्वाकांक्षी योजना पर काम आरम्भ किया। दोनों ने दस खंडों में एक पुस्तक लिखी ''हैंडबुक ऑफ द बर्ड्स ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान''। इस पुस्तक में इस उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले सभी पक्षियों के बारे में जानकारी है। उनकी आकृति, उनके पाए जाने की जगहें उनकी प्रजनन की आदतें, प्रव्रजन (माइग्रेशन) और यह भी कि उनके बारे में और क्या जानना बाकी है।

सन् 1987 में सालिम अली की मृत्यु हो गई।

- दिलीप मधुकर साल्वी

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

खूंखार	----------	प्रेक्षण	----------
पर्यवेक्षण	----------	वरिष्ठ	----------
विलुप्त	----------	बुलफ्रेम	----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) सालिम अली का पूरा नाम क्या था?

(ख) चाचा ने सालिम अली का परिचय किससे कराया था?

(ग) ॲपोलो स्ट्रीट पर किस सोसाइटी का कार्यालय था?

(घ) सालिम अली ने कौन-से पक्षी को खोज निकाला?

(ङ) सालिम अली को पक्षी संरक्षण के लिए कौन-सा पुरस्कार मिला था?

(च) इस पाठ में कौन-कौन सी पुस्तकों का उल्लेख है?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(क) सालिम अली ने जिस घायल पक्षी को उठाया था, उसकी पहचान मुश्किल क्यों थी ?

(ख) बॉम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी में सालिम अली ने क्या-क्या सीखा ?

(ग) एक भारतीय बालक द्वारा किसी पक्षी के बारे में सवाल किए जाने पर मिस्टर मिलार्ड को क्यों आश्चर्य हुआ ?

(घ) सालिम अली का अन्य पक्षी प्रेमियों से टकराव होने का क्या कारण था ?

(ङ) सालिम अली के पास कॉलेज की डिग्री नहीं थी परन्तु वे कौन-से गुण थे, जिन्होंने उन्हें असाधारण बनाया ?

प्रश्न 4. सही जोड़ियाँ बनाइए -

(अ)	(आ)
वर्षा	घर
अजायब	ऋतु
विश्व	चिड़िया
घायल	विज्ञानी
पक्षी	विद्यालय

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

ऑफिस, अवैतनिक, विस्मित, वयस्क प्राणिशास्त्र, कॉलेज।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग लिखिए-

विलुप्त, असाधारण, सम्मान, प्रशिक्षण, अनुपस्थिति, उपयोग, सौभाग्य

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय लिखिए-

नारीत्व, राष्ट्रीय, भारतीय, विवाहित, पक्षीवाला, प्राणिशास्त्र

'प्राणिशास्त्र' शब्द दो शब्दों 'प्राणी' और 'शास्त्र' से मिलकर बना है। जब दो ऐसे शब्दों में संधि होती है तब पहले शब्द के अन्त में दीर्घ 'ई' की मात्रा हो तो सन्धि के बाद बने शब्द में वह मात्रा बदलकर हस्व 'इ' की मात्रा हो जाती है।

प्रश्न 4. नीचे लिखे शब्द किन दो शब्दों के मेल से बने हैं ? लिखिए-

अजायबघर, पक्षिविज्ञानी, महत्वपूर्ण, महाद्वीप, महत्वाकांक्षी, प्रस्तुतिकरण, प्राणिशास्त्र।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो -

जो बिना वेतन लिए काम करता है। .....

जो मार्गदर्शन करता है। .....

जहाँ पानी के जहाज आकर खड़े होते है। .....

जो पक्षियों से प्रेम करता है। .....

पक्षियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखने वाला।.....

जो बात मुख से कही गई है। .....

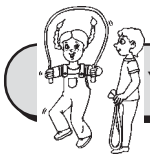

योग्यता विस्तार

अपने घर के आस-पास बाग-बगीचों में आने या रहने वाले पक्षियों को ध्यान से देखो और नीचे बना चार्ट पूरा करो

पक्षी का नाम	आकृति रंग रूप	भोजन	आदतें	प्रजनन का समय